# कड़ी 31

## कोई हमेशा है आसपास...

आलेख व अनुसंधानः डॉ. अनुराग शर्मा

समन्वय एवं परिकल्पनाः डॉ. बी. के. त्यागी

**पात्रः**

**डॉक्टर स्नेहाः 45 वष (खुफिया विभाग में उप–निदेशक)**

**सुनील कुमारः 55 वर्ष (खुफिया विभाग में निदेशक)**

**नंदूः 19 वर्ष (स्टार्ट–अप कंपनी में पार्टनर और कॉलेज का विद्यार्थी)**

**आशः 19 वर्ष (स्टार्ट–अप कंपनी में पार्टनर और कॉलेज का विद्यार्थी)**

**ओमः 18 वर्ष (स्टार्ट–अप कंपनी में पार्टनर और कॉलेज का विद्यार्थी)**

**राघवनः 55 वर्ष (खुफिया विभाग में उप–निदेशक)**

**दो अन्य अधिकारी**

**दृश्य 1**

**कुछ लोगों की आवाजें जैसे किसी बड़े हॉल में कई लोग बैठें हैं...**

**सुनील कुमारः** लेडीज़ एंड जेंटलमेन...अं...लेडीज़ तो एक ही हैं...हां तो डॉक्टर स्नेहा और जेंटलमेन...आप सभी जानते हैं कि आज हम खुफिया विभाग के सबसे गंभीर समय से गुजर रहे हैं और मैं यानी इस विभाग का निदेशक आप सभी से गुजारिश करूंगा की सभी शांति बनाए रखें...डॉक्टर स्नेहा...

**डॉ. स्नेहाः** जैसा आप सभी मामले से पूरी तरह वाकिफ हैं, हम अभी उन दो लोगों का इंतजार कर रहें हैं जो एआई यानी आर्टिफिशियन इंटेलिजेंस का स्टार्ट–अप चला रहे हैं...और महारी समस्या का समाधान एआई आधारित टेक्नोलॉजी के द्वारा ढूंढने में मदद करेंगे...

**राघवनः** अं...वो अविरल और आशू...जिन्होंने स्टार्ट–अप कंपनी **एयरस्पाई** शुरू की है? वो तो पहले भी कई समाधान लेकर आ चुके हैं, जिससे हमें मदद भी मिली थी...

**सुनील कुमारः** हां राघवन...अविरल और आशू...वैसे मुझे तो अविरल का नंदू नाम ही पसंद है...हां तो जेंटलमेन नंदू और आशू सीधे कॉलेज से आ रहे हैं और उन्हें इस मामले के बारे में कुछ भी नहीं पता है...यहां आने पर हम उन्हें ब्रीफ करेंगे...

**राघवनः** डॉक्टर स्नेहा, ये नंदू तो आपका बेटा है ना?

**सुनील कुमारः** हां, राघवन, नंदू हमारी उप–निदेशक डॉक्टर स्नेहा का ही होशियार बेटा है जिसने अपनी काबिलियत के बल पर इस उम्र में ये कंपनी खोली है और इस कंपनी के कई समाधान हमारी सरकार भी उपयोग कर रही है...

**एक अन्यः** हां...और उसे इनोवेशन के लिए राष्ट्रपति से पुरस्कार भी तो मिला है...

**डॉ. स्नेहाः** जी, पिछले साल ही मिला था...

**राघवनः** अरे वाह डॉक्टर स्नेहा, पिछले साल आपको भी देश की सुरक्षा के अनेक मामले सुलझाने के लिए भी राष्ट्रीय मेडल मिला था?

**डॉ. स्नेहाः** जी हां...मिस्टर राघवन...

**तभी दरवाजा खुलने की आवाज...**

**एक आदमी की आवाज**– सर मिस्टर अविरल और आशू आ गए हैं...

**सुनील कुमारः** ठीक है, भेजो उन्हें...

**दो जोड़ी जूतों की आवाज...**

**सुनीलः** आओ अविरल...अं...नंदू...आशू...आओ... बैठो...

**कुर्सियां खिसकने की आवाज...**

**सुनीलः** ये जो प्रोजेक्टर पर तुम इन दो लोगों की तस्वीर देख रहे हो, इन्हे तुम जानते नहीं हो। आज से करीब बीस साल पहले ये दोनों देशद्रोही राजन और रजत कुमार भारत की खुफिया सूचनाएं दुश्मनों को देते हुए पकड़े गए थे। दोनों तब युवा थे और दोनों ने देश को बहुत नुकसान पहुंचाया और इनकी वजह से हमारे कई साथी शहीद हो गए थे...

**आशूः** तो ये दोनों अभी आपकी कैद में हैं?

**स्नेहाः** नहीं आशू, ये दोनों करीब सत्रह साल पहले कोर्ट में पेशी के दौरान हुए एक धमाके में मारे गए थे...

**नंदूः** तो जब ये मारे ही गए थे, तो अब क्यों इन गद्दारों को याद किया जा रहा है?

**सुनीलः** नंदू...असल में उस समय कोर्ट में धमाका इतना जबरदस्त हुआ था कि करीब उसमें सोलह लोग मारे गए थे और कुछ की ठीक से पहचान भी नहीं हो पाई थी...

**आशू ने थोड़ा जोर देकर पूछा**– तो क्या ये जिंदा हैं?

**नंदूः** आशू...और अगर ये जीवित भी हैं तो हमें इनसे क्या खतरा हो सकता है, उस समय आपने इनका नेटवर्क तो खत्म कर ही दिया होगा?

**स्नेहाः** नंदू–आशू ये दोनों खुफिया विभाग के बड़े अधिकारी थे और दोनों के पास ऐसी कई जानकारियां थीं जिससे दुश्मन देश को काफी लाभ मिल सकता है। जैसे हमारे देश की न्यूक्लियर कमांड को स्थापित करने में इन दोनों की बड़ी भूमिका थी...

**नंदू–आशू–एकसाथ**– हैं...न्यूक्लियर कमांड!!!

**आशूः** **गुस्से से**– देश के खुफिया विभाग में ही गद्दार, तो देश कैसे सुरक्षित रहेगा...

**सुनीलः** हां आशू, ये हमारा दुर्भाग्य है, लेकिन हमें शक है कि ये दोनों दुश्मन के साथ आज भी मिलें हुए हैं और भारत पर बड़ा हमला करने के साथ हमारे न्यूक्लियर मिसाइलों को नष्ट करने की एक बड़ी योजना पर काम कर रहे हैं, हमारे बीच में ही रहकर...

**आशूः** तो...तो...फिर इसमें हम क्या मदद कर सकतें हैं?

**स्नेहाः** देखो, इन राजन और रजत दोनों का नेटवर्क हम जानते हैं और ये तुम भी समझते हो कि पूरा नेटवर्क ना तो ध्वस्त किया जाता है और ना ही सभी को पकड़ा जाता है, लेकिन नजर पूरी रखी जाती है जिससे इनके नेटवर्क में और कौन–कौन हैं ये पता चलता रहे...

**नंदूः** हां, ये तो मैं जानता हूं। पर अब ऐसा क्या हो गया कि आपको ये लगने लगा कि ये ही दोनों काम कर रहे हैं और कोई भी तो हो सकता है?

**राघवनः** तुम दोनों ने हमें एक ऐसा साफ्टवेयर दिया था, जो एआई पर आधारित था और लोगों के बोलने के तरीके, आवाज में उतार–चढ़ाव, दुख में कैसी आवाज, खुशी में कैसी आवाज, गुस्से में बोलने का तरीका आदि अनेक पैमानों की गणना करके, तुरंत व्यक्ति को पहचान लेता है, भले ही वो व्यक्ति कितनी आवाज बदलकर बात करे, फिर भी तुम्हारा साफ्टवेयर उसकी लगभग सटीक पहचान कर लेता है...हैं ना?

**आशूः** जी, वो हमारा एवरवॉयस साफ्टवेयर था, इसके लिए हमें सरकार ने पुरस्कार भी दिया था...

**राघवनः** हां वो ही, पिछले तीन महीने से हमें तुम्हारा एवरवॉयस साफ्टवेयर...रजत की आवाज के कुछ संदेश भेज रहा है, हालांकि हमें वो आवाज कुछ अलग लग रही थी, पर तुम्हारा एवरवॉयस साफ्टवेयर उसे रजत की ही आवाज बता रहा है और रजत उन संदेशों में हमारी न्यूक्लियर मिसाइलों की लोकेशन दुश्मनों को भेज रहा है...

**नंदूः** **हैरानी से**– अच्छा!

**सुनीलः** हां नंदू...हमें तीन संदेश मिलें हैं जो रजत की आवाज में हैं और ये मैसेज बिल्कुल सही हैं और सबसे बड़ी बात इन मिसाइलों की लोकेशन की जानकारी सिर्फ दो ही लोगों को थी और दोनों को तुम जानते हो...एक मैं और दूसरी डॉक्टर स्नेहा...

**नंदू और आशूः** ओह...पर ये कैसे हो सकता है...आप दोनों के पास से ये जानकारी कैसे जा सकती है?

**स्नेहाः** पर ऐसा हुआ है नंदू–आशू...मैं और सुनील सर जिन मिसाइलो की लोकेशन जानते हैं, वो राजन और रजत के प्रोजेक्ट का हिस्सा थीं, लेकिन तब इन्हें वहां रखा नहीं गया था, बल्कि भविष्य में क्या होना इसकी प्लांनिंग की गई थी, क्योंकि तब ये मिसाइल ही हमारे पास नहीं थीं...अगर मान लो रजत सच में जीवित है और उसने तुक्का मारा है तो भी दो मिसाइलों की लोकेशन उसने बिल्कुल ठीक बताई हैं...

**सुनीलः** **बेहद गंभीर स्वर में**– बिल्कुल ठीक कहा डॉक्टर स्नेहा...पर नंदू सबसे खतरनाक बात ये है कि कल हमारे विभाग में सिर्फ चार अधिकारियों और मंत्री जी के बीच एक खुफिया बैठक हुई थी, जिसमें कुछ और मिसाइलों की लोकेशन और अन्य महत्वपूर्ण चर्चाएं हुईं थीं। और आज तुम्हारे एवरवॉयस साफ्टवेयर ने फिर एक मैसेज इंटरसेप्ट किया जिसमें ये सारी जानकारी दुश्मनों तक पहुंचाई जा रही थीं...

**आशूः** ओह...एक और मैसेज!

**राघवनः** हां आशू, लेकिन इसबार एवरवॉयस साफ्टवेयर ने आवाज रजत की नहीं बल्कि राजन की बताई...

**नंदू और आशू के मूंह से एकसाथ निकला–** हैं!!!

**नंदूः** पर ऐसा कैसे हो सकता है कि कोई कमरे में ना हो और उसे सारी जानकारी पता चल जाए। इस कार्यालय में खुफिया माइक्रोफोन, कैमरे आदि लगाना तो संभव ही नहीं है, क्योंकि रोज दिन में चार बार हर कमरे, हर कोने की जांच होती है और कई इलैक्ट्रॉनिक उपकरण भी लगे हैं जो इस सब बातों पर नजर रखते हैं।

**आशूः** **कुछ सोचते हुए–** तो फिर क्या इस कमरे में जो लोग बैठे हैं उनमें से ही कोई?

**सुनीलः** तुम शायद ये ही सोच रहे हो कि हो सकता है वो गद्दार हममें से ही कोई है और हां...मैं भी यही मानता हूं। इसीलिए हमने अपने सभी अधिकारियों की जांच के अलावा वो लोग जिनसे संबंधित सूचनाएं लीक हुई हो सकती हैं, उन सभी को जांच पूरी होने तक हर प्रोजेक्ट से अलग कर दिया है और वो सभी. ..मेरे सहित तुम्हारे सामने मौजूद हैं...

**स्नेहाः** हां...हम सातों में से ही कोई वो गद्दार हो सकता है और जबतक ये पता ना चल जाए हममे से कोई यहां से बाहर नहीं जा सकता। हां हमारी आवाज के सैंपल भी ले लिए गए हैं, लेकिन अभी तक एवरवॉयस साफ्टवेयर ने उसे रजत या राजन की आवाज नहीं बताया है...

**आशूः** हैं!!! पर आंटी...ऐसा कैसे हो सकता है...ये तो पॉसिबल ही नहीं है। अगर एवरवॉयस साफ्टवेयर ने वो आवाज पहचानी है तो आवाज उन्ही की होगी...

**नंदूः** **कुछ सोचते हुए–** हां आशू...ये हो सकता है, क्या पता कि एक ही व्यक्ति की तीन आवाजें हों!!!

**एक अन्य अधिकारी–** क्या मतलब?

**नंदूः** जी, कुछ नहीं अभी तो सोच ही रहें हैं। तो आप बताइए, हमसे क्या चाहते हैं.. .

**सुनीलः** नंदू, हमें रजत और राजन या जो भी गद्दार हैं, उन्हें ढूंढने में हमारी मदद करनी होगी और हां...तबतक नंदू और आशू भी इस कमरे से बाहर नहीं जा सकते...

**आशूः** अरे, ऐसा क्यूं?

**नंदू:** कोई बात नहीं आशू, इसमें घकराने की बात नहीं है, ये देश के लिए है... सुनील सर, इसके लिए कुछ उपकरण और अपने एक और साथी ओम की जरूरत है...

**सुनील:** ठीक है नंदू...मैं तुम्हारे साथी ओम और उपकरणों को लाने का इंतजाम करता हूं...

## दृश्य 2

## दृश्य परिवर्तन का संगीत

## किसी के जल्दी आने की आवाज

**नंदू:** आ जाओ ओम...सर ये ओम है...आओ मैं तुम्हें समझाता हूं...

## संगीत

**ओम:** **धीरे से**– अच्छा अपने फंस रहे थे तो मुझे भी फंसा दिया, मैं घर जा रहा हूं..
.

**नंदू:** नहीं यार ओम, मेरे दिमाग में कुछ आइडिया है पर इसमें तेरी जरूरत है। मैं चाहता हूं तूने जो नेत्र साफ्टवेयर विकसित किया है, उसी की आज जांच कर लेते हैं...

**ओम:** नेत्र सॉफ्टवेयर!!! ओह समझा....

**नंदू:** **थोड़ी ऊंची आवाज में**– सुनील सर, हमें एक अलग से कमरा चाहिए होगा और उसमें ये उपकरण लगाने होंगे और ये पांच कैमरे इसी हॉल में एक कुर्सी के सामने लगाने होंगे जिनका कनेक्शन हमारे रूम से होगा...

**सुनील:** ठीक है नंदू, सब इंतजाम हो जाएगा, ये जुड़ा हुआ कमरा है, ये तुम लोगों के लिए ठीक रहेगा...

**स्नेहा:** ओम ये नेत्र सॉफ्टवेयर क्या है?

**आशू:** आंटी, ओम ने एक नया एल्गोरिथम बनाया है, जो असल में गणितीय निर्देश होतें हैं जिनके अनुसार साफ्टवेयर कार्य करता है...

**ओम:** आंटी, एक्चुअली, एआई में ऐसे ही एल्गोरिथम होतें हैं जिनके अनुसार मशीन कार्य करती है या साफ्टवेयर कार्य करता है...

**राघवनः** तो कुछ एआई आधारित सॉफ्टवेयर है...

**स्नेहाः** हां मिस्टर राघवन...नंदू की हमेशा से एआई में बहुत रूचि थी, आज इस टेक्नोलॉजी से ऐसी मशीनों का निर्माण हो रहा है जो अपने कार्य खुद करती हैं, जैसे बिना ड्राइवर से चलने वाली कारें या सर्जरी करते रोबोट...

**सुनीलः** ठीक कहा स्नेहा, आजकल तो हर क्षेत्र में एआई का जोर है, चाहे किसी कंपनी के लिए कर्मचारियों का चयन करना हो या नए बाजार की तलाश करनी हो सब एआई पर ही आधारित होता जा रहा है...

## दृश्य 3

## द्श्य परिवर्तन का संगीत

## कुछ उपकरण आदि लगाने की आवाजें, कुर्सियां खिसकाने की आवाजें

**आशूः** यार, काफी बुरे फंस गए...ये लोग तो स्नेहा आंटी पर भी शक कर रहे हैं?

**ओमः** हां, आशू और वो तो ये करेंगे ही, निदेशक साहब ने खुद को ही नहीं बक्शा और ये देखों...ये दोनों राजन और रजत के फोटो दिए हैं, वो भी करीब बीस साल पुराने!

**नंदूः** **मॉनीटर ऑन होने की आवाज**– हां भई ओम...देश का सवाल जो है...

**आशूः** **कंप्यूटर की आवाजें** – नंदू मैंने सभी कर्मचारियों का डाटा अपने सिस्टम में डाल लिया है और सभी की फाइल अब हमारा एआई आधारित सॉफ्टवेयर पढ़ रहा है और उन फाइलों को अलग करता जा रहा है जिनमें कुछ अनोखी बात हो...जैसे किसी के वजन में अचानक से कमी या वृद्धि, किसी के चलने के तरीके में बदलाव या कोई बिना बताए लंबे समय तक गायब रहा हो...

**नंदूः** गुड...ओम तुम हॉल में जाकर वो पांच कैमरे फिट कर दो...

**ओमः** ठीक है नंदू...बस अभी करके आया...

**आशूः** रूक ओम, मैं कैमरे के सामने कुर्सी लगा देता हूं...तू फोकस कर लेना...चल...

## दृश्य 4

## दृश्य परिवर्तन का संगीत

**आशूः** हैलो...जी सबसे पहले डॉक्टर स्नेहा आप जाकर उस कुर्सी पर बैठ जाइए...

**सैंडल्स पहने पैरों के चलने की आवाज**

**ओमः** डॉक्टर स्नेहा जी, क्या मिसाइलों की लोकेशन आप ने किसी के साथ शेयर की थी?...

**स्नेहाः** नहीं...

**आशूः** ठीक है आप जा सकती हैं, डॉक्टर स्नेहा...

**राघवनः** **धीरे से बोलते हुए** – ये अठ्ठारह–उन्नीस साल के बच्चे क्या कर रहे हैं और डॉ. स्नेहा से सिर्फ एक ही सवाल पूछा? शायद उन्हें जानते हैं इसलिए, अब ऐसे ये क्या खाक केस हल करेंगे...

**अचानक से नंदू की आवाज हॉल में गूंजी**– श्री राघवन...

**कुर्सी की आवाज**

**नंदूः** आप यहां हेडक्वाटर में आने से पहले कहां थे?...

**राघवनः** **रुखे स्वर से** – केरल...मैं वहां के क्षेत्रीय खुफिया ऑफिस में था...

**आशूः** आप हेडक्वाटर में कब आए?

**राघवनः** **सोचकर** – अं...करीब बारह साल पहले...

**ओम ने फुसफुसाकर कहा**– आशू कैमरे का फोकस और ठीक करो...नंदू स्क्रीन देखो...

**नंदूः** **धीरे से** – ओह...– **फिर ऊंची आवाज में** – राघवन जी, आपकी पत्नी कहां हैं और बच्चे कितने हैं?

**राघवन ने सहजता से जवाब दिया**– मेरी दो बेटियां थीं, केरल में बोट राइड के दौरान एक हादसे में मेरी पत्नी और दोनों बच्चियों की मृत्यु हो गई थी...

**ओमः** **धीरे से** – आशू...नंदू...ये डाटा देखो...

**राघवनः** **लगभग चिल्लाते हुए बोले**– ये आप लोग क्या सवाल पूछ रहे हैं, ये सब मेरी फाइल में आपको मिल ही गया होगा...सुनील सर ये आप भी डॉ. स्नेहा

कहने पर इन बच्चों पर भरोसा कर रहें हैं...ये कुछ नहीं पता कर पाएंगे। हमें रियल इन्वेस्टिगेशन करना चाहिए...हम समय बर्बाद कर रहे हैं...

**नंदू:** **शांति से** – राघवन जी आप शांति से हमारे सवालों का जवाब दीजिए। आप के बीवी और बच्चों की मृत्यु कब हुई थी?

**राघवनः** **थोड़ी असहजता से** – अं...करीब पंद्रह साल पहले...

**तभी ओम की आवाज गूंजी** – आपने राघवन जी को क्यों मारा?...

**अचानक से लोगों की आवाजें, जैसे कोई खलबली मच गई हो**

**सुनील कुमारः** **चिल्लाए**– अरेस्ट हिम...

**तेजी से बूटों की आवाज**

**सुनीलः** पकड़ो इसे...हां...बैठाओ...हां उसी कुर्सी पर बैठाओ...ओम अपने सवाल पूछो...

**ओमः** **चिल्लाकर जल्दी–जल्दी बोलते हुए**– ये देखिए राघवन जी...ये आप ही हैं.. .आप वो नहीं हैं जो दिख रहें हैं...आपकी पहचान यही है ना...बोलिए...बोलिए...
**राघवन– परेशान होकर चिल्लाकर**– हां...हां, मैने ही राघवन को मारा था...

**एक अन्य अधिकारी ने चिल्लाकर पूछा**– अगर तुम राघवन नहीं हो तो... तुम हो कौन?...

**नंदू की आवाज गूंजती है**– ये राजन हैं...

**स्नेहाः** हैं...नंदू क्या कह रहे हो...ये राजन है...तो राघवन कहां है?

**जूतों की आवाजे जैसे कोई कमरे में आ रहा है**

**नंदू:** सुनील सर, वैसे ये का इतनी जल्दी का तो नहीं था, पर हमने कुछ एआई आधारित साफ्टवेयर तैयार कर रखे थे, इसलिए सब इतनी आसानी से हो पाया। एआई ने इनका झूठ पकड़ा और फिर प्लास्टिक सर्जरी द्वारा बदले गए चेहरे के नीचे का असली चेहरा दिखाया...

**सुनीलः** प्लास्टिक सर्जरी?...फिर कैसे पता चला, नंदू?

**आशू:** असलल में सर, राजन ने चेहरे का प्लास्टिक सर्जरी के द्वारा राघवन के चेहरे जैसे बदलाव करवाए हैं या कहें राघवन के चेहरे को प्रत्यारोपित करवाया है

और जो थोड़ी बहुत कमी थी, उसे इसने एक्सीडेंट के दौरान चोट बताकर गुमराह किया था...

**सुनीलः** तो राजन अब तुम बताओ...क्या हुआ था...वैसे तुम तुम जानते हो कि सच तो हम उगलवा ही लेंगे...इसीलिए खुद ही बता दो तो तुम्हारे लिए अच्छा रहेगा...

**राघवनः** बताता हूं सर, वो ब्लास्ट भारत के विदेशी दुश्मनों द्वारा कराया गया था, जिसमें रजत मारा गया था, लेकिन बेहद सावधानी से उन लोगों ने मुझे यानी राजन को बचा लिया और मुझे फिर से खुफिया विभाग में भेजने का सफल प्लान बनाया गया...

**स्नेहाः** **गुस्से से** – क्या प्लान बनाया गया था?

**राघवनः** डॉक्टर स्नेहहा, प्लान के तहत केरल में विभाग के ही एक अन्य खुफिया अधिकारी यानी राघवन का अपहरण किया गया और उसकी हत्या करके, कुछ उसके चेहरे के उभार जैसे नाक, गाल आदि को मेरे चेहरे पर प्रत्यारोपित किया गया। उस समय राघवन अपने परिवार के साथ टर्की की यात्रा पर था। फिर थोड़ी बहुत ट्रेनिंग के बाद मुझे वापस केरल भेजा गया, लेकिन जहां एक झूठे बोट एक्सीडेंट में राघवन के परिवार की मृत्यु की खबर फैलाई गई। कुछ समय बाद विभाग ने राघवन यानी मुझे हेडक्वाटर बुला लिया और मैंने योजना अनुसार खुफिया जानकारियां दुश्मनों को देनी शुरू कर दीं...

**सुनीलः** **कड़ककर**– देश को बेचने के लिए कितने पैसे मिले राजन– **फिर और तेज चिल्लाकर कहा**– दीपक इसे अपने चार्ज में लो और पूछताछ शुरू करो...मैं अभी आता हूं...आप रुकिए डॉक्टर स्नेहा...

**लोगों के जाने की आवाजें**

**सुनीलः** वाह स्नेहा, तुमने ठीक कहा था, इन लड़कों के पास ये क्षमता है...ये कर लेंगें.. .वैरी गुड...पर नंदू, आशू, ओम तुम लोगों ने ये किया कैसे?...

**नंदूः** असल में सर हमने एक एआई सिस्टम तैयार किया है जो झूठ बोलने पर व्यक्ति के हावभाव, शरीर के तापमान, दिल की धड़कन में बदलाव आदि अनेक गणनाओं को करके कौन झूठ बोल रहा है, ये बता देता है जैसे ज्यादातर आदमी अगर झूठ बोलते हैं, तो उनकी नाक के सबसे आगे वाले हिस्सें अनेक तंत्रिकाओं में उत्तेजना के कारण खुजली होने लगती है और राजन की नाक पर हुई खुजली ने हमें अलर्ट कर दिया...

**स्नेहाः** **हैरानी से** – पर ये राजन है, ये तुम्हे कैसे पता लगा और वो रजत और राजन की आवाजें?...

**ओमः** आंटी, एक बात है कि व्यक्ति के चेहरे के फीचर में कुछ हिस्से हैं जो कभी बदलते नहीं, जैसे नाक और आंखों के बीच का अनुपात...और ऐसे ही आंखों की पेशियां जैसे आइरिस के पैटर्न भी नहीं बदलते। अब भले ही बीस साल पुराना फोटो हो या बचपन का...एआई सभी की सही सही गणना करके व्यक्ति के असली चेहरे को पकड़ ही लेती है...चाहे प्लास्टिक सर्जरी ही करा ली हो...

**आशूः** और आंटी, जहां तक राजन की आवाज की बात है, इसने वोकल कॉर्ड की सर्जरी करवाकर अपनी आवाज बदलवा ली थी और आप लोगों को राजन और रजत की जो आवाज सुनाई दी थीं, वो एआई आधारित कई साफ्टवेयर की मदद से कॉल करके आसानी से किया जा सकता है और इन्होंने आप लोगों को गुमराह करने के लिए रजत और राजन की आवाजों में मैसेज दिए... बाकी आप तो अब सब पता कर ही लोगे...

**नंदू, आशू और ओम की एकसाथ हंसी की आवाज**

**सुनीलः** हां वो तो है...

**सम्मिलित हंसी**

**नंदूः** एक बात और...आजकल, चेहरे की पहचान करने वाले साफ्टवेयर में एआई टेक्नोलॉजी का उपयोग किया जा रहा है, लेकिन एआई को दक्ष बनाने के लिए डाटा की जरूरत होती है और जो हमीं लोग कंपनियों को देते हैं...

**सुनीलः** हम देते हैं डाटा? वो कैसे?

**नंदूः** अरे सुनील सर, जब कोई सोशल मीडिया की कंपनी आप सबसे कहती है कि अपना आज वाला और दस साल पुराना फोटो डालो, तो लोग खुशी–खुशी लाइक के चक्कर में खूब फोटो डालते हैं...दस क्या बीस–बीस साल पुरानी फोटो...बस इसी डाटा से कंपनी अपने साफ्टवेयर चैक कर लेती है और उसमें जरूरत अनुसार सुधार कर लेती है...

**सुनीलः** लो तो हमस ब मिलकर इन कंपनियों की मदद कर रहे हैं...वाह भई, तुम्हारा ये नेत्र साफ्टवेयर मैं हर एयरपोर्ट, रेलवे स्टेशन, बाजारों आदि में लगाने की सिफारिश करूंगा...जरूरी है कि कोई हमेशा आसपास हो। अभी तुम लोग घर चलो, आराम करो...मैं एक–दो दिन में तुम्हें बुलाऊंगा। डॉक्टर स्नेहा बहुत बहुत धन्यवाद आप भी आराम करो...मैं जरा राजन से मुलाकात कर लूं...

**सभी एकसाथः** गुड नाइट सर...

**स्नेहाः** शाबास बच्चों, चलो मैं तुम्हें घर छोड़ देती हूं...आराम करो थक गए होगे...

**ओमः** आंटी मैंने घर पर मना कर दिया है आज हम नंदू के साथ ही रुकेंगे...और आप बढ़िया–सा खाना खिला देना...

**स्नेहाः** अरे वाह ठीक है चलो...अपना सारा सामान ले लो...मैं गाड़ी निकालती हूं...

## दृश्य 5

## कार चलने की तेज आवाज

**स्नेहाः** **फोन पर**– हां, मनीषा...साहब आ गए...अच्छा दो और लोगों के लिए खाना बना देना...अं...वो खीर जरूर बना लेना...हां वो...साहब को फोन देना...हां...बस ठीक रहा...हां तीनो कमाल के हैं...रुको बात कराती हूं...अरे...लो तीनों एक'दूसरे के कंधे पर सर टिकाकर बहुत गहरे सो रहे हैं...हां...घर आए तो बात कर लेना...आज इन्होंने देश को फिर एक बहुत बड़े खतरे से बचा लिया...अब ज़माना इन्हीं का है या कहें आर्टिफिशियन इंटेलिजेंस का...

## हंसी

## समाप्त